विश्व जल दिवस के अवसर पर एमआरआईयू में गूंजी जल संरक्षण की पुकार

- जल संरक्षण में बैंकों की भूमिका का विवरण करते हुए पीएनबी की एमडी व सीईओ श्रीमति ऊषा अनंथसुब्रमनियम ने किया संबोधन

- जल व नौकरी थीम के साथ हुआ आयोजन

विश्व जल दिवस के अवसर पर मानव रचना इंटरनैशनल यूनिवर्सिटी में जल संरक्षण की पुकार गूंज उठी। जल संरक्षण की पुकार जन-जन तक पहुंचाने के लिए उद्देश्य के साथ इस दिन सेमिनार का आयोजन एमआरआईयू के द्वारा इंडियन नैशनल कमिटी ऑफ इंटरनशनल एसोसिएशन ऑफ हाइड्रोजियोलॉजिस्ट (आईएचए) के सहयोग से किया गया। सेमिनार में जल के वैज्ञानिकों से लेकर संस्थाओं ने स्टूडेंट्स को जल की जरूरत व उसके न होने पर, उसके नुकसान से अवगत कराया।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि सैंट्रल ग्राउंड वॉटर बोर्ड के चेयरमैन डॉ. के.बी. बिसवास पहुंचे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में पीएनबी की सीईओ एंड एमडी श्रीमति ऊषा अनंथसुब्रमनियम मौजूद रहीं व अन्य गणमान्य अतिथियों में मानव रचना शैक्षणिक संस्थान की मुख्य संरक्षका श्रीमति सत्या भल्ला, जीएचएस के प्रेसिडेंट डॉ. डी.के.चढ्ढा, सीजीडब्ल्यूबी के सदस्य डॉ. जी.सी.पती, सीजीडब्ल्यूबी के वैज्ञानिक-डी डॉ. मुखर्जी, आईएनसी-आईएएच से डॉ. दिपांकर साहा, एमआरईआई के ट्रस्टी डॉ. एम.एम.कथूरिया, यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. एन.सी.वाधवा मौजूद, एमआरआईयू के फैकल्टी ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्ट के डीन श्री जितेंद्र सहगल व एमआरआईयू बायोटैक की एचओडी डॉ. सरिता सचदेवा मौजूद रहीं।

विश्व जल दिवस के कार्यक्रम की शुरुआत मानव रचना शैक्षणिक संस्थान परिसर में पंजाब नैशनल बैंक की ब्रांच के उद्घाटन के साथ की गई। वहीं इस मौके पर पीएनबी की एनजीओ प्रेरणा साउथ सर्कल के द्वारा सनातन धर्म सीनियर सैकेंडरी स्कूल फरीदाबाद को आरओ सिस्टम बच्चों को बेहतर पेयजल प्रदान करने के उद्देश्य के साथ दान किया गया।

इस मौके पर सभी संबोधित करते हुए श्रीमति ऊषा अनंथसुब्रमनियम ने कहा कि जल सभी के लिए बहुत जरूरी है, जल के बिना जीवन ही संभव नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृत में 280 तरीकों से जल को लिखा जाता है। इस मौके पर डीके चढ्ढा ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम जल संरक्षण के बार में विस्तृत में जाने और उस पर अमल करें। सरकार को जल संरक्षण के लिए बेहतर पॉलिसी बनानी चाहिए क्योंकि भले ही हम जल की उपलब्धता में नौवां देश हैं लेकिन यहां पर जल सरंक्षण के लिए कोई खास इंतजाम नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि स्टूडेंट्स के माध्यम से जन जन में जल संरक्षण की अलख जगाने के उद्देश्य से एमआरआईयू में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग, रिस्टोरेशन ऑफ वॉटर आदि नए कोर्स करने के लिए संबंध स्थापित किया जा रहा है।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे डां. के.बी.बिसवास ने कहा कि अगर हमारे पास जल है तो उस जल की सुरक्षा व रक्षा का जिम्मा भी हमारा है। हम धरती के 4 प्रतिशत जल का प्रयोग कर सकते हैं। ऐसे में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हमारे पास जितना जल है इसका सही तरह से प्रयोग किया जाए।

वहीं कार्यक्रम में पहुंचे डॉ. दीपंकर साहा ने भविष्य में जल की कमी के कारण होने वाली परेशानियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि साल 2050 तक जल की इतनी कमी हो जाएगी कि पीने के लिए भी भरपूर पानी नहीं मिलेगा। इनके अलावा डॉ. जी.सी. पती ने कहा कि अगले 20 सालों में जल की कमी के कारण काफी खराब स्थिति हो सकती है। वैज्ञानिकों के ऐसे संबोधन से स्टूडेंट्स व फैकल्टी इस मुद्दे को लेकर भावुक हो गए और उन्होंने जल संरक्षण में अहम भूमिका निभानी की कसम खाई। इस मौके पर वॉटर क्विज का भी आयोजन किया गया।